Quadrant II – Transcript and Related Materials

Programme: Bachelor of Arts(First Year)

Subject: Hindi

Paper Code: HNG 101

Paper Title: साहित्य का परिचय 1

Unit: 02

Module Name: सभ्य अंग्रेजी पोशाक में (सत्य के प्रयोग आत्मकथा का अंश)

Module No: 10

Name of the Presenter: Dr. Vibha Lad

Transcript

इस व्याख्यान के माध्यम से छात्र गांधीजी के जीवन संबंधी सिध्दांतों को समझ सकेंगे तथा उनसे प्रेरणा ग्रहण कर सकेंगे। 'सभ्य अंग्रेजी पोशाक में' यह अंश गांधीजी के 'सत्य के प्रयोग' आत्मकथा से लिया गया है। मूल रूप से यह आत्मकथा गुजराती भाषा में लिखी गयी है। इसके बाद अन्य भाषा में इसका अनुवाद किया गया।

आगे बढने से पहले आत्मकथा विधा पर मैं कुछ कहना चाहूँगी। आत्मकथा का मतलब है अपनी आपबीती कहना। यहाँ आत्मकथाकार अपने जीवन में घटित घटनाओं का ब्यौरा पाठकों तक पहुँचाता है। सत्य घटना तथा उसके अनुभव पाठकों के लिए प्रेरणा बन सकते हैं। महात्मा गांधीजी के व्यक्तित्व से हम सभी परिचित हैं। पूरे विश्व को उन्होंने अहिंसा तथा सत्याग्रह का संदेश दिया। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। उनकी जीवन शैली पूरे विश्व के लिए उदाहरण है। उनकी आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' इसलिए महत्वपूर्ण है कि उन्होंने अपने गुणों के साथ साथ दोषों का भी स्वीकार किया हैजो पाठकों , के लिए मिसाल तथा प्रेरणा बन सकता है।

इस अंश के माध्यम से गांधीजी हमें यही संदेश देना चाहते हैं कि जीवन में छद्म आकर्षण में व्यक्ति कभी कभी अनजाने में भटक जाता है सभ्यता की परिभाषा पोशाक में नहीं है बल्कि अपने आचरण तथा विचारों में समाहित होती है। जब हम महात्मा गांधी का नाम लेते

है तो हमें लगता है कि यह कोई अवतारी पुरूष है लेकिन जब हम इनकी सत्य के प्रयोग यह आत्मकथा पढ़ते हे तब हमें लगने लगता है किगांधीजी भी हमारी और , आप की तरह एक सामान्य व्यक्ति थे। किन्तु जब इन्हें अपने कर्तव्य का अहसास हुआ तब असामान्यता की ओर इनका सफर शुरू हुआ। बस यही हम आपके लिए प्रेरणा है। महात्मा गांधी ने प्रस्तुत अंश में यूरोप की एक घटना का उल्लेख किया है। अपने कानून की पढाई करने के लिए वह यूरोप गये थे। जाने से पहले उन्होंने अपने माता पिता को वचन दिया था कि वह वहाँ मांस तथा मदिरा का सेवन नहीं करेंगे।

यूरोप जाने के पश्चात् शाकाहार पर उनकी आस्था दिन प्रतिदिन बढ़ने लगी। और उनके मित्र के लिए यह चिंता का विषय बन गया। ऐसे समय पर मित्र को लगने लगा कि अगर गांधीजी मांसाहार नहीं करेगे तो कमजोर हो जाएंगे। अंग्रेजी समाज में घुल मिल नहीं पाएंगे। इसलिए एक दिन नाटक देखने के बहाने उन्होने गांधीजी को एक होटल में बुलाया और एक प्लेट ऑर्डर की जिसमें सूप था। लेकिन गांधीजी को शक हो गया। उन्होंने परोसने वाले को बुलाकर पूछना चाहा कि इसमें क्या है? लेकिन इससे पहले ही मित्र उनपर बरस पड़े। उन्होंने कहा कि इस तरह से पूछना अंग्रेजी समाज में जंगलीपन कहलाता है। उनको जाना ही है तो किसी दूसरे शाकाहरी होटल में जाए। मित्र की फटकार सुनकर गांधीजी एक शाकाहारी होटल में चले गये, किंतु वह होटल बंद हो चुका था। गांधीजी ने विचार किया कि उनको मित्र का यह डर दूर कर देना चाहिए। उन्हें भी मित्र की दृष्टि से सभ्य बनने की कोशिश करनी चाहिए। अपने रहन सहन में बदलाव लाने की कोशिश करनी चाहिए। ऐसे समय पर उन्हें अपने कपडे बहुत ही फटे पुराने महसूस होने लगे। इसलिए उन्होंने आर्मी और नेवी स्टोर जाकर नये कपडे सिलवाए। उन्होंने चिमनी टोपी खरीदी। सोने की बढिया चेन खरीदी। बंधी बंधाई टाई अंग्रेजी समाज में सभ्य नहीं कहलाता था। इसलिए उन्होंने टाई बांधने की कला हस्तगत की। उन्हें लगा की इसके साथ साथ नृत्य की कला भी सीखनी चाहिए। वह भी उन्होंने वर्ग में जाकर सीखने की कोशिश की। फिर उन्हें लगा उन्हे संगीत भी आना चाहिए तो वायलिन भी खरीदा। जो पढ़ाई के लिए उनको पैसे दिए गए थे वह इन सभी पर खर्च करते जा रहे थे। उन्होंने फ्रेंच भाषा सीखी। उन्होंने भाषण देने की कला सीखने की कोशिश की। यह सब वह करते जा रहे थे। उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर वह क्या कर रहे है।

एक दिन वह बाजार से बेल की 'स्टेंडर्ड एज्युकेशनिस्ट' किताब अपने घर लाते है। इस किताब से उनके जीवन में परिवर्तन आ जाता है। उस किताब को पढ़ने उसके पश्चात् उन्हें अहसास होने लगता है कि वह जो कुछ भी कर रहे वह सिर्फ पल भर की खुशी के लिए कर रहे है। वह तो विद्यार्थी है। और उन्हें विद्या धन अर्जित करना चाहिए। एक विद्यार्थी का

कर्तव्य होता है कि वह अधिक से अधिक ज्ञान अर्जित करें। तब उन्हें सभ्य अंग्रेजी पोषाक बेमतलब लगने लगता है। और वह संकल्प करते हैं कि वह आगे इस तरह के ब्याह्य आकर्षण को छोड़कर विद्या धन बढाएंगे।

आज भी यह अंश काफी प्रासंगिक लगता है। हम आज कल बाह्य आकर्षण के पीछे भाग रहे हैं। पैसे बरबाद कर रहे हैं। हमें दिखावा पसंद है। जबकि हमें हमारे आचरण पर बल देना चाहिए। हमारे ज्ञान को बढ़ाना चाहिए। जब हमारे अंदर ज्ञान होगा प्रतिभा होगी तब अपने आप हमारे अंदर आत्मविश्वास आ जाएगा। अपने आप हमारी खूबसूरती बढ़नी लगेगी। प्रस्तुत अंश छात्रों को बाहरी आकर्षण से बचने तथा अपने आचरण की सभ्यता को अधिक महत्व दोने का संदेश देता है।